कदर- ए- कीमत....

यह जोर आजमाइश की बात,
यह आखिरी लड़ाई की बात,
ये बमों के धमाके,
ये मिसाइलों के पटाखे,

इस हथियारों की होड़ में,
जरूरत है लोगों को मरहम की,
कोई अब क्यों? याद नहीं करता,
हिरोशिमा की हालत-ए-जंग को।

भूल गये है, हम अब सब
इन्सानियत की अहमियत को,
मानो अब कम हो गई है,
याददाश्त इनसानों की।

ऐसा लगता है, कि बढ़ रहा है,
मानव सिर्फ पतन की ओर,
अब क्यों? कोई नहीं है करता,
प्यार और मोहब्बत की बातें।

इस मदहोश दुनिया में इन्सानों की
ना ही कोई कीमत, न ही कोई कदर।

उपजिंदर